Result Mitra

रिजल्ट मित्र स्पेशल

Hand Written

करंट अफेयर्स नोट्स

1

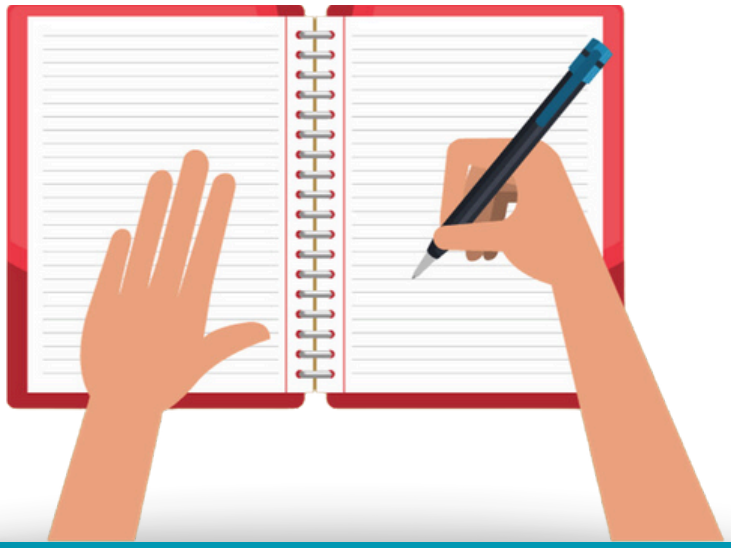

विश्व कुष्ठ दिवस और कुष्ठ रोगों के प्रति जागरूकता

विश्व कुष्ठ रोग दिवस प्रतिवर्ष जनवरी के आखिरी रविवार को मनाया जाता है।

भारत में यह प्रतिवर्ष जनवरी के आखिरी रविवार को मनाया जाता है

भारत में यह प्रतिवर्ष 30 जनवरी को महात्मा गाँधी की पुण्यतिथि के दिन मनाया जाता है।

उद्देश्य

- कुष्ठ रोग के बारे में जागरूकता फैलाना
- रोगियों को समर्थन देना।
- वैश्विक प्रयासों को बढ़ावा देना।

2025 की थीम

एकजुट होना, कार्य करना, कुष्ठ रोग को समाप्त करना।

शुरुआत :- 1954 में फ्रांसीसी लेखक और परोपकारी राउल फोलेरो द्वारा

कुष्ठ रोग के बारे में

रोग :- एक दीर्घकालिक संक्रामक रोग

उपनाम :- हैनसेन रोग

कारक :- माइकोबैक्टीरियम लेप्री और माइकोबैक्टीरियम लेप्रोमेटोसिस बैक्टीरिया।

संक्रमण - हवा के माध्यम से

प्रभावित अंग - त्वचा, हाथ, पैर, नाक, आँखें

Result Mitra

विश्व कुष्ठ दिवस और कुष्ठ रोगों के प्रति जागरुकता

कुष्ठ रोग के लक्षण

1. त्वचा पर हल्के रंग या लाल रंग के धब्बे जो सुन्न हो सकते हैं।
2. हाथों और पैरों में सुन्नता या झुनझुनी महसूस होना।
3. मांसपेशियों में कमजोरी और लकवा।
4. त्वचा का मोटा होना और घाव।
5. नाक बंद रहना और सांस लेने में कठिनाई (यदि श्वसन तंत्र प्रभावित हो)।

कुष्ठ रोग का उपचार

- कुष्ठ रोग पूरी तरह से ठीक किया जा सकता है।
- इसका इलाज मल्टी-ड्रग थेरेपी (MDT) द्वारा किया जाता है, जो विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा मुफ्त में उपलब्ध कराया जाता है।
- उपचार में 6 महीने से 1 साल का समय लग सकता है।

कुष्ठ रोग से संबंधित जागरूकता अभियान

1. भारत में राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम (NLEP - National Leprosy Eradication Programme):
    - 1983 में भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया।
    - इसका उद्देश्य कुष्ठ रोग को समाप्त करना और रोगियों को पुनर्वास प्रदान करना है।
2. WHO और अन्य संगठनों की पहल:
    - विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) और LEPRA, Novartis Foundation, और International Federation of Anti-Leprosy Associations (ILEP) जैसे संगठन कुष्ठ रोग के उन्मूलन के लिए कार्य कर रहे हैं।
3. संतोष यादव अभियान:
    - भारत में कुष्ठ रोग के खिलाफ जागरूकता बढ़ाने के लिए अभियान चलाए जा रहे हैं।
    - विभिन्न NGOs और सरकारी एजेंसियां प्रचार-प्रसार, मुफ्त जांच शिविर और दवाइयों की उपलब्धता को सुनिश्चित कर रही हैं।

विश्व पुस्तक मेला और पुस्तकों का जीवन शैली में प्रभाव

प्रगति मैदान के हॉल 2-6 में शनिवार से नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2025 शुरू होगा। इसका उद्घाटन मंडपम में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु करेंगी।

- वैश्विक भागीदारी के साथ मेले की इस बार की थीम रिपब्लिक @75 रखी गई है।
- इस पुस्तक मेले में रूस को फोकस राष्ट्र के रूप में नामित किया गया है।

पुस्तक मेले का महत्व

- साहित्यिक विविधता
- लेखकों और पाठकों के बीच संवाद
- पढ़ने की आदत को बढ़ावा देना।
- सांस्कृतिक आदान-प्रदान
- ज्ञान का प्रसार

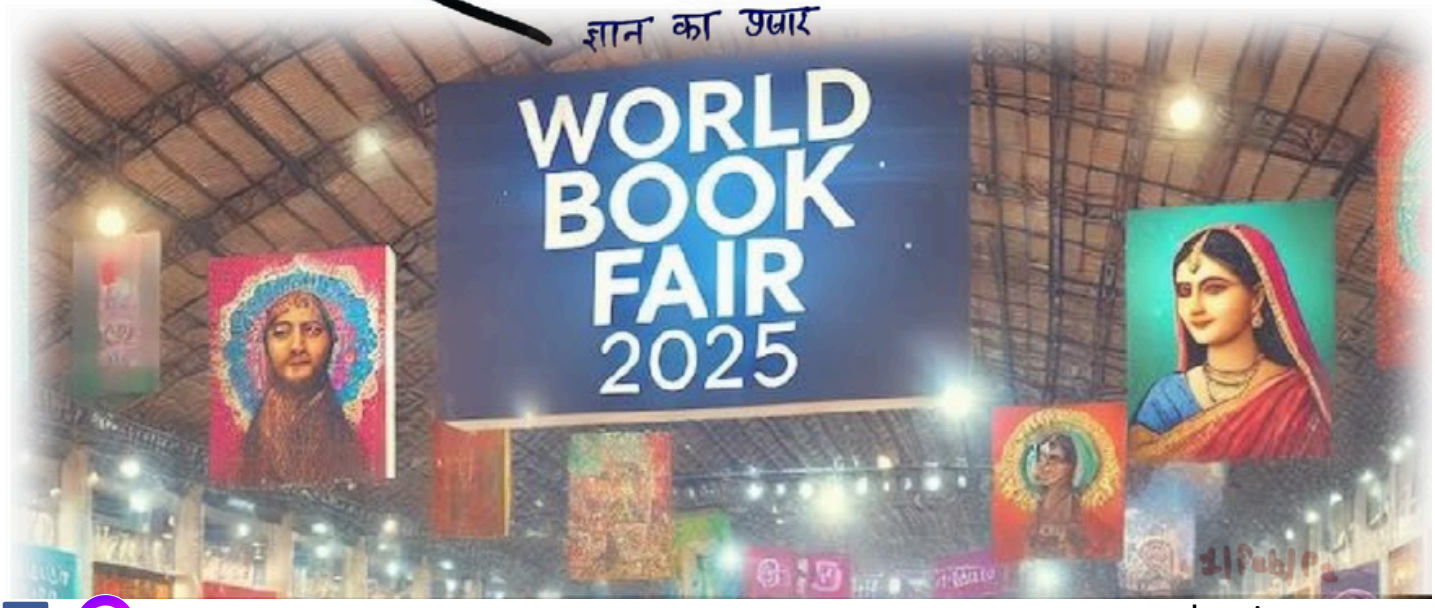

@resultmitra www.resultmitra.com

विश्व पुस्तक मेला और पुस्तकों का जीवन शैली में प्रभाव

इतिहास और विकास

भारत में पहला विश्व पुस्तक मेला वर्ष 1972 में नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय और अंतरराष्ट्रीय साहित्य को एक साझा मंच प्रदान करना था, जिससे विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और लेखन शैलियों का आदान-प्रदान हो सके। समय के साथ, इस मेले का दायरा और महत्व बढ़ता गया, और यह अब दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित पुस्तक मेलों में से एक बन चुका है।

प्रमुख ऐतिहासिक विकास:

1 आरंभिक चरण और सीमित भागीदारी:

- प्रारंभ में, यह मेला मुख्य रूप से भारतीय लेखकों और प्रकाशकों तक ही सीमित था।
- भारतीय साहित्य और संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इसे आयोजित किया गया।
- इस दौरान, पाठकों और लेखकों के बीच प्रत्यक्ष संवाद का भी मंच मिला।

2 अंतरराष्ट्रीय विस्तार और वैश्विक पहचान:

- समय के साथ, इस मेले ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई और इसमें 50 से अधिक देशों के प्रकाशकों और लेखकों की भागीदारी होने लगी।
- यह मेला वैश्विक साहित्यिक संवाद को बढ़ावा देने वाला एक प्रमुख मंच बन गया।
- इसमें अंतरराष्ट्रीय पुस्तक विमोचन, साहित्यिक गोष्ठियाँ, और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होने लगे।

3 डिजिटल क्रांति और तकनीकी समावेश:

- 21वीं सदी के डिजिटल युग ने इस पुस्तक मेले के स्वरूप को भी प्रभावित किया।
- अब इसमें ई-बुक्स, ऑडियोबुक्स, और वर्चुअल पुस्तक प्रदर्शनियों का समावेश किया जाने लगा है।
- डिजिटल प्लेटफार्मों पर ऑनलाइन बुक रीडिंग, लाइव वेबिनार और वर्चुअल इवेंट्स के माध्यम से इसकी पहुंच और अधिक विस्तारित हो गई।

क्रॉसपैथी - चर्चा में

क्रॉसपैथी एक ऐसी प्रथा है जिसमें एक चिकित्सक अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र से बाहर जाकर दूसरी चिकित्सा पद्धति का उपचार प्रदान करता है।

उदा० - एक होम्योपैथी चिकित्सक एलोपैथिक दवाएँ लिख सकता है।

चिंताएँ क्यों?

- रोगी सुरक्षा
- गलत निदान और उपचार
- चिकित्सा पद्धतियों की अखंडताएं

कानूनी और नियामक मुद्दे

- भारतीय चिकित्सा परिषद के दिशानिर्देश
- सर्वोच्च न्यायालय का फैसला

क्रॉसपैथी को बढ़ावा देने के कारण

- ग्रामीण क्षेत्रों में डॉक्टरों की कमी
- स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच

आगे का रास्ता

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करना

आयुष चिकित्सकों के लिए अतिरिक्त प्रशिक्षण

टेलीमेडीशिन को बढ़ावा देना।

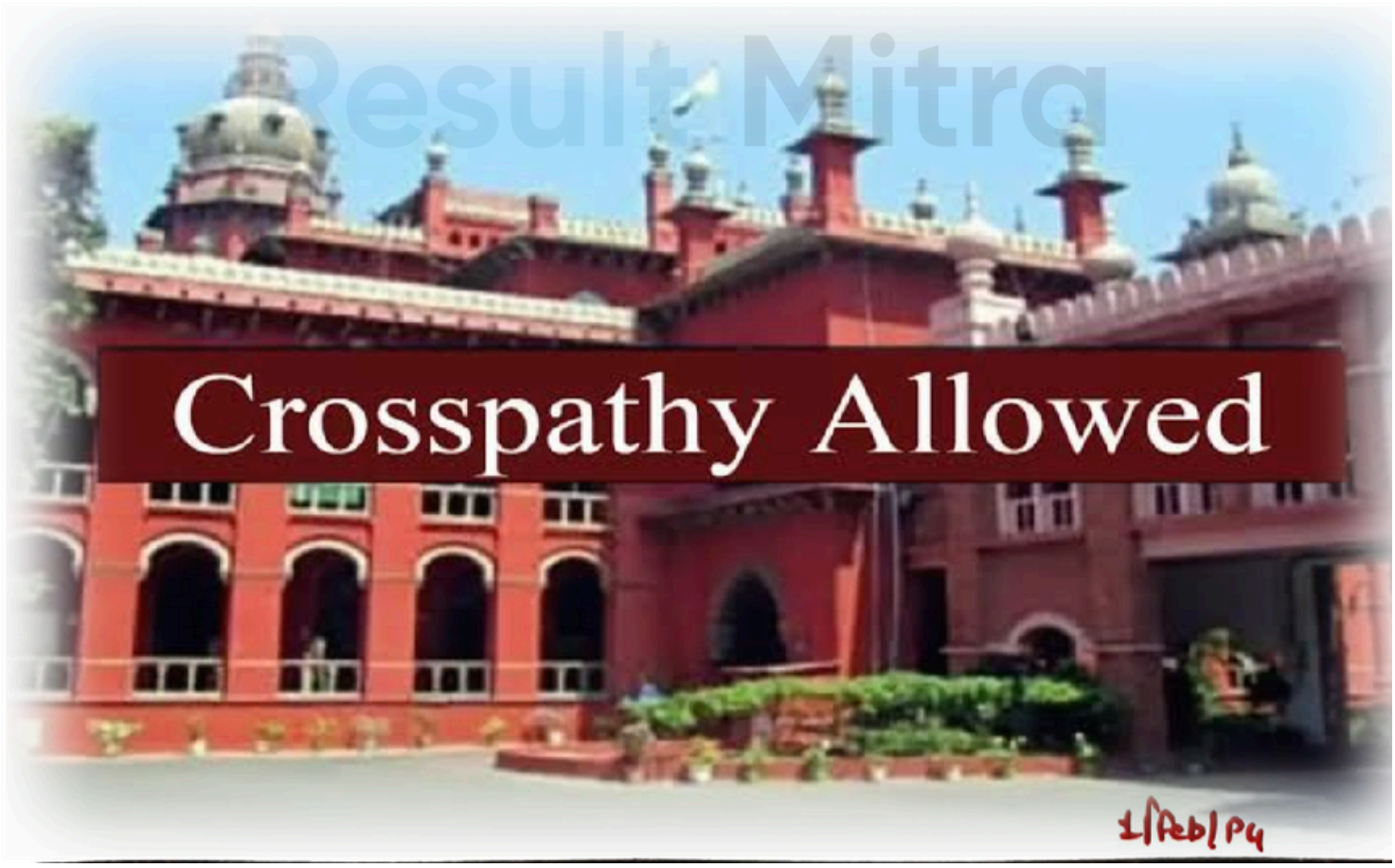

@resultmitra www.resultmitra.com

अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन- शुभांशु शुक्ला का चयन

अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) के लिए एक्सिओम मिशन-4 के पायलट के रूप में लखनऊ के शुभांशु शुक्ला चुने गए हैं।

अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन

* यह अंतरिक्ष में बना सबसे बड़ा मानव निर्मित ऑब्जेक्ट है।
* यह पृथ्वी की परिक्रमा करता है और अंतरिक्ष यात्रियों के रहने का स्थान है।
* यह एक विज्ञान प्रयोगशाला है।
* इसका मकसद अंतरिक्ष में इंसानों के रहने का असर परखना है।
* यह पृथ्वी से करीब 400 किलोमीटर की ऊँचाई पर घूमता है।
* यह पृथ्वी के चारों ओर करीब 28000 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से घूमता है।
* यह पृथ्वी की एक परिक्रमा करीब 90 मिनट में पूरी करता है।

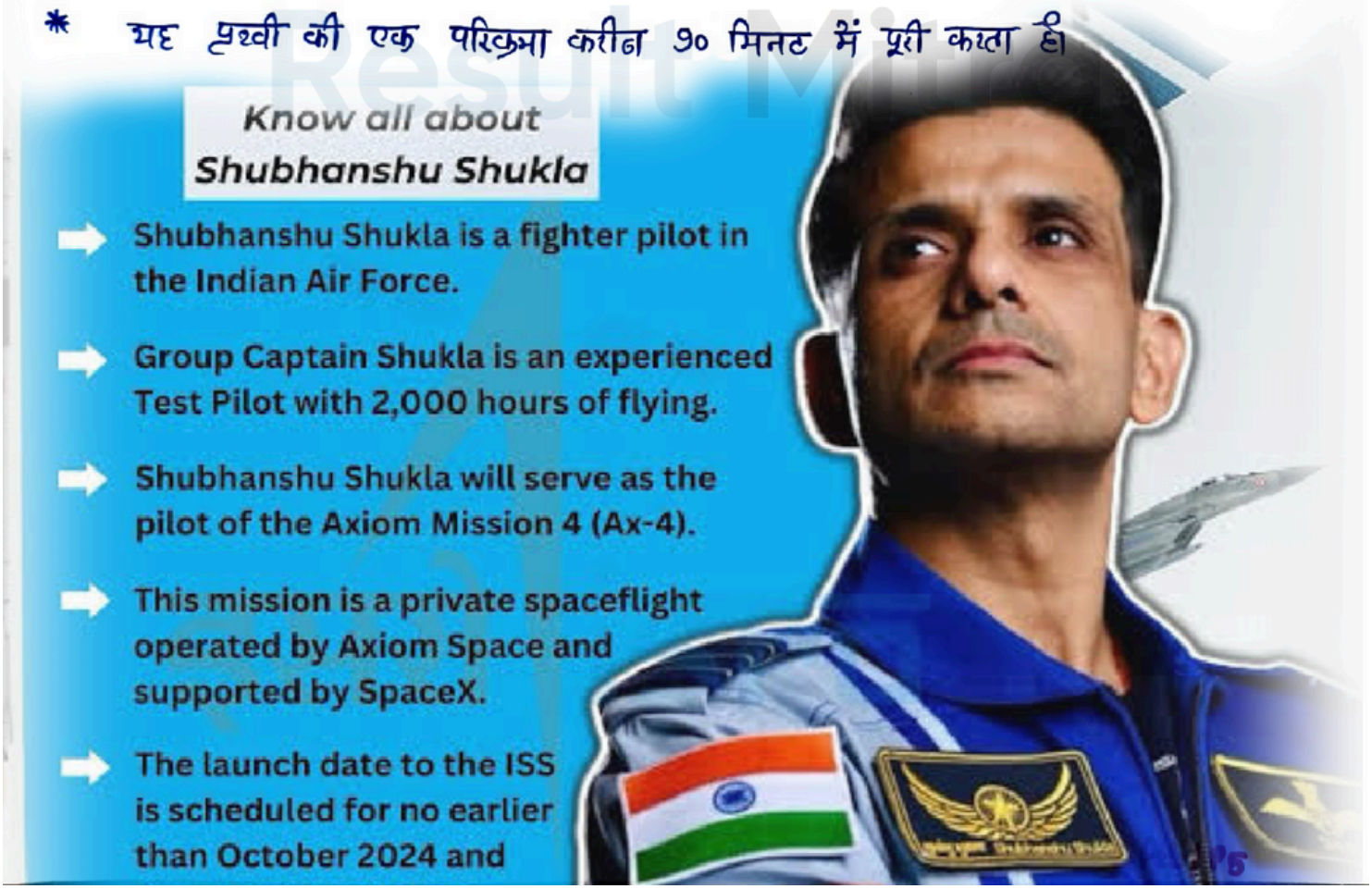

अंतराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन शुभांशु शुक्ला का चयन

अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) – परिचय

स्थापना: 1998

संचालन: NASA (USA), Roscosmos (Russia), ESA (Europe), JAXA (Japan), और CSA (Canada)

कार्य: वैज्ञानिक अनुसंधान, अंतरिक्ष में जीवन पर अध्ययन, और भविष्य के अंतरिक्ष मिशनों की तैयारी

परिक्रमा: पृथ्वी के चारों ओर 90 मिनट में एक चक्कर (लगभग 28,000 किमी/घंटा की गति)

भारतीय कनेक्शन: अब तक कोई भारतीय अंतरिक्ष यात्री ISS पर नहीं गया है, लेकिन भविष्य में भारतीय अंतरिक्ष यात्री गगनयान मिशन के तहत अंतरिक्ष में जा सकते हैं।

नागरिक उड्डयन सुरक्षा ब्यूरो एवं उसके नए महानिदेशक

हाल ही में राकेश निरवान को BCAS का नया महानिदेशक नियुक्त किया गया है। वे एक वरिष्ठ IPS अधिकारी है।

निरवान की नियुक्ति के महत्व

- अनुभव
- सुरक्षा चुनौतियों से निपटने की क्षमता
- अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

BCAS के मुख्य कार्य

- हवाई अड्डों की सुरक्षा
- सुरक्षा मानकों का निर्धारण
- सुरक्षा प्रशिक्षण
- अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

@resultmitra www.resultmitra.com

मिनजुर भक्तवत्सलम - कौन थे

मिंजुर भक्तवत्सलम एक भारतीय वकील राजनेता और स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने तमिलनाडु के मुख्यमंत्री के रूप में भी कार्य किया था।

जीवनकाल :- 9 अक्टूबर 1887 – 31 जनवरी 1987

स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

* ऐनी बेसेंट के होमरूल लीग आंदोलन में भाग लिया।
* रौलेट एक्ट के विरोध में सक्रिय रहे।
* महात्मा गांधी से प्रभावित होकर स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हुए।
* 1932 में सविनय अवज्ञा आंदोलन
* 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह
* भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रहे।
* तमिलनाडु के अंतिम कांग्रेस मुख्यमंत्री और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले अंतिम मुख्यमंत्री थे।
* 31 जनवरी को पुण्यतिथि